

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर

डेविड अडलर,
चित्र: डैन ब्राउन
हिंदी: विदूषक



जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर



डेविड अडलर, चित्र: डैन ब्राउन हिंदी: विदूषक

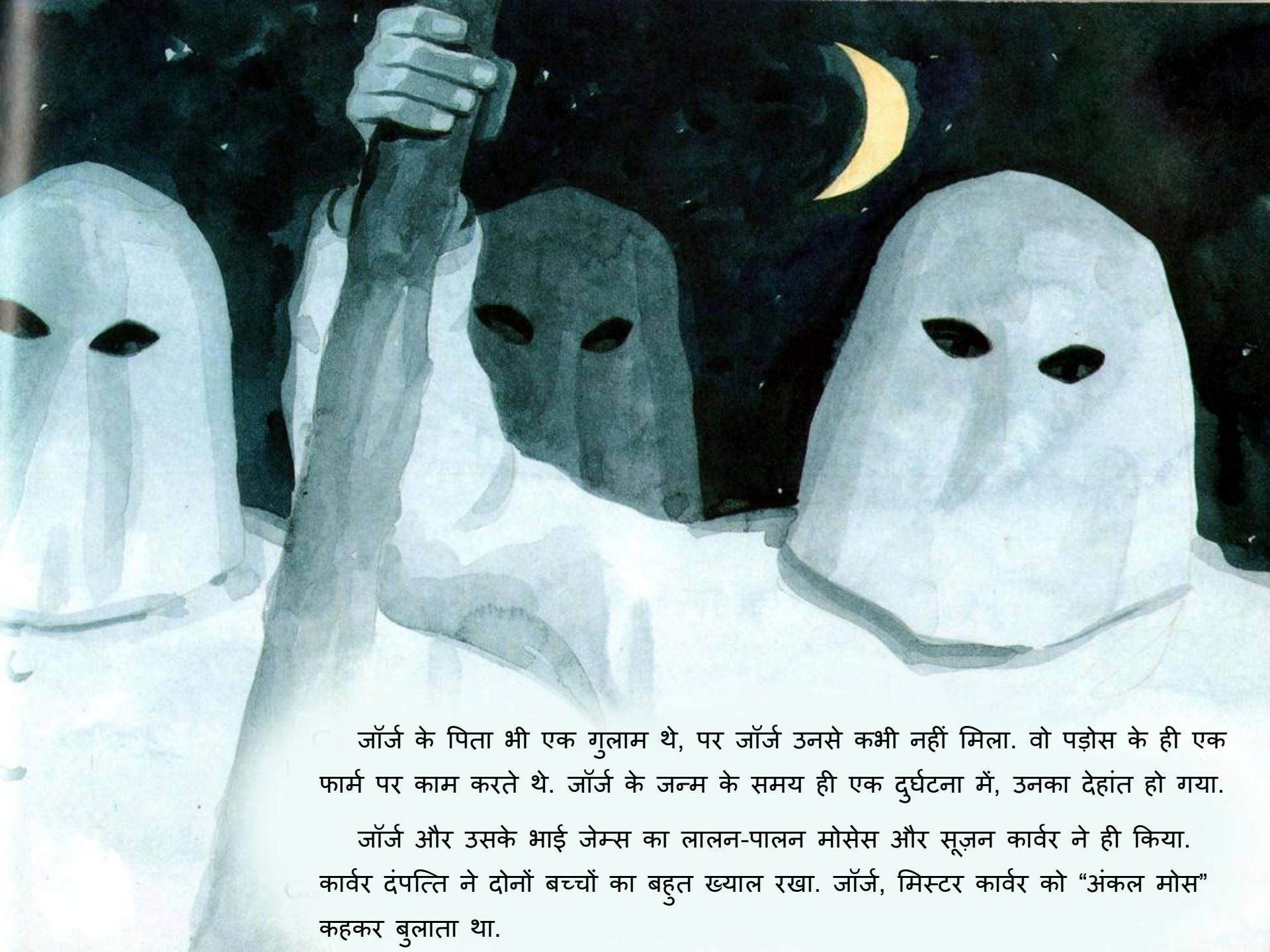
जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर एक गुलाम पैदा हुआ. वो किस साल पैदा हुआ -
1864 या 1865 में - गृहयुद्ध की समाप्ति पर, यह उसे कभी पता नहीं चला.
वो मिसौरी, अमरीका में मोसेस और सूज़न कार्वर के फार्म पर पैदा हुआ.
उसकी माँ - मैरी, वहां एक गुलाम थी.







जॉर्ज अपनी माँ को बिल्कुल नहीं जानता था. जब वो बहुत छोटा था तभी छापामार उसे और उसकी माँ मैरी को पकड़कर अरकानसस ले गए. वहां एक पड़ोसी को जॉर्ज, सड़क पर पड़ा दिखा और वो उसे घर वापिस लाया. पर मैरी बहुत खोजने पर भी कहीं नहीं मिली. उसके बाद से जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने, अपनी माँ को कभी दुबारा नहीं देखा.



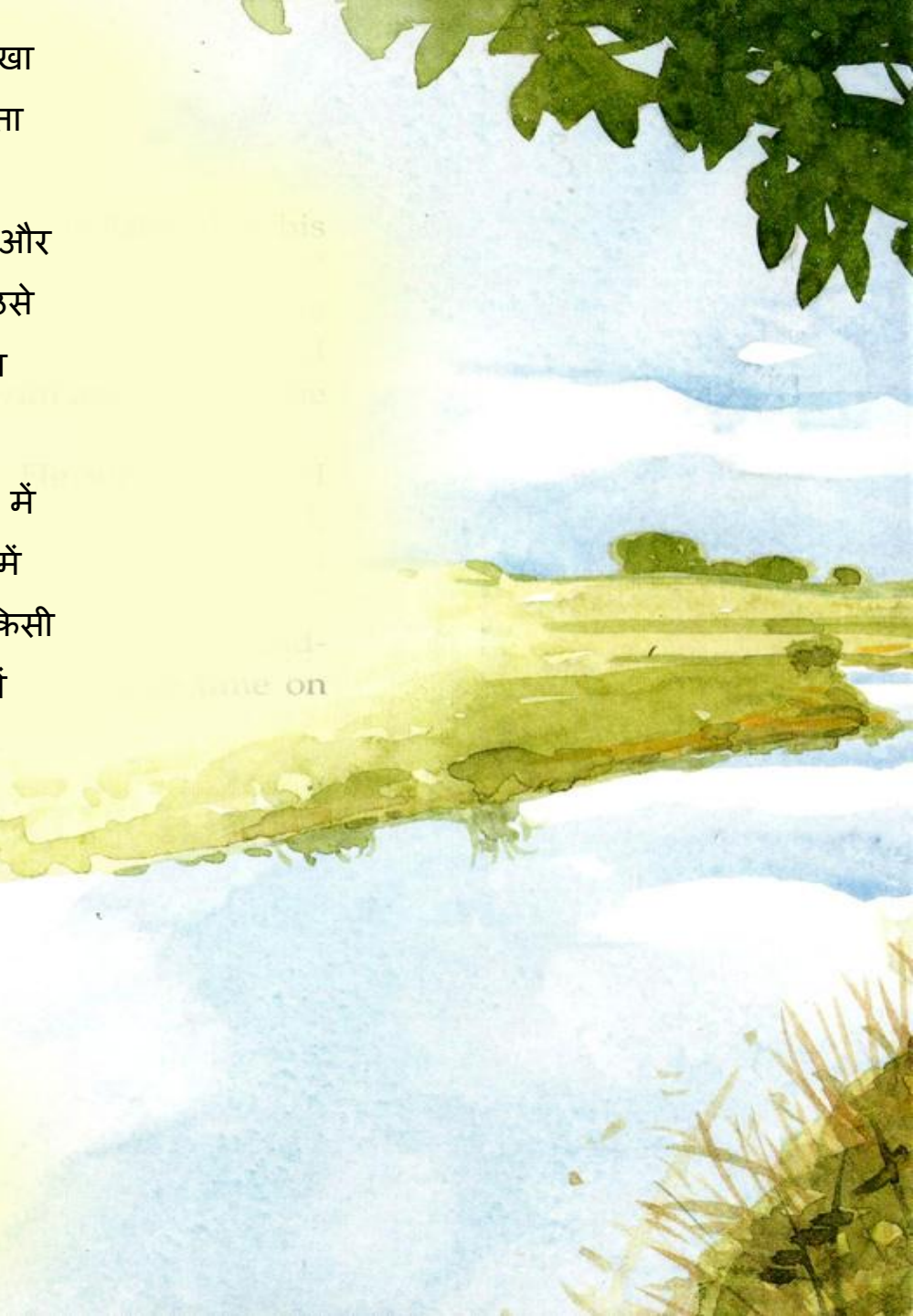
जॉर्ज के पिता भी एक गुलाम थे, पर जॉर्ज उनसे कभी नहीं मिला. वो पड़ोस के ही एक फार्म पर काम करते थे. जॉर्ज के जन्म के समय ही एक दुर्घटना में, उनका देहांत हो गया.

जॉर्ज और उसके भाई जेम्स का लालन-पालन मोसेस और सूज़न कार्वर ने ही किया. कार्वर दंपत्ति ने दोनों बच्चों का बहुत ख्याल रखा. जॉर्ज, मिस्टर कार्वर को “अंकल मोस” कहकर बुलाता था.

जॉर्ज बचपन में काफी कमज़ोर था. उसने बाद में लिखा “मेरे शरीर में हमेशा, जीवन और मृत्यु के बीच युद्ध चलता रहता था.” इसलिए कार्वर दंपत्ति ने उसे फार्म पर कोई कठिन काम करने नहीं दिया. वो जानवरों को चारा देता और फिर घर के कामकाज में सूज़न कार्वर की मदद करता. उसे पास के जंगल में घूमने और तैरने का खूब समय मिलता था.

जॉर्ज का अपना एक छोटा बगीचा भी था. उसने बाद में लिखा, “मैं हरेक पत्थर, कीड़े, पक्षी और जानवर के बारे में जानने का इच्छुक था.” और आगे, “अगर गलती से मैं किसी पौधे की जड़ या फूल को कुचल देता, तो मैं दुःख से घंटों रोता रहता.”

उसने अपने बगीचे को कहीं दूर झाड़ियों में छिपाकर बनाया. कारण? उस समय लोग फूलों के पौधे उगाना, एक नंबर की बेवकूफी मानते थे.





कार्वर दंपत्ति चाहते थे कि जॉर्ज भी किसी अन्य गोरे बच्चे जैसे ही पढ़े-लिखे. उन्होंने उसे कुछ पढ़ना और थोड़ा लिखना भी सिखाया.

जॉर्ज बहुत कुछ सीखना चाहता था. उसके पास सिर्फ एक किताब थी “वेबस्टर एलीमेंट्री स्पेल्लिंग बुक”. उसने वो किताब इतनी बार पढ़ी थी, कि अब वो उसे पूरी तरह रट गई थी. पर उस किताब में जॉर्ज के सवालों के जवाब नहीं थे.

बारह साल की उम्र में जॉर्ज पास में नेओशो के, अफ्रीकी-अमरीकी बच्चों के स्कूल में पढ़ने गया. वहां वो मारिया और एंड्रू वाटकिंस – अश्वेत दंपत्ति के साथ रहा. रहने और खाने के बदले में वो, उनके घर का कामकाज करता.

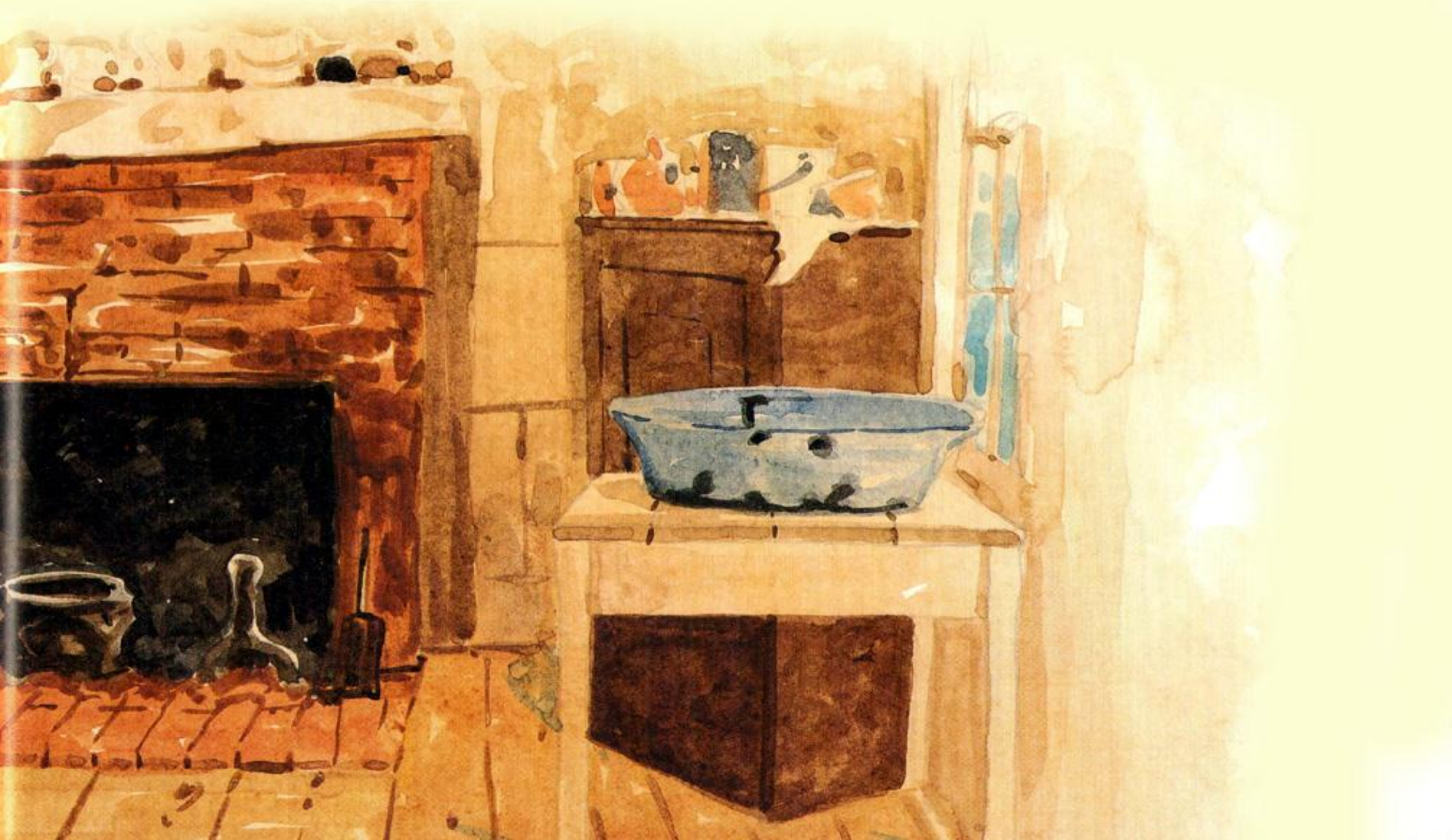




उसकी “आंट” मारिया एक नर्स थीं. किन पौधों और जड़ी-बूटियों से बीमारियां ठीक होती हैं?
यह जॉर्ज ने “आंट” मारिया से सीखा. मारिया से उसने समय का मूल्य भी सीखा. दोपहर के छुट्टी में
वो स्कूल से घर आकर, कपड़े धोने में “आंट” मारिया की मदद करता था. उसके पास खेलना का कोई
समय नहीं बचता था.



नेओशो की टीचर, जॉर्ज से बहुत ज्यादा नहीं जानती थी. वहां एक साल रहने के बाद जॉर्ज को लगा कि अब उसे कहीं और जाना चाहिए. फिर उसे एक परिवार मिला जो फोर्ट स्कॉट, केंसास जा रहा था. यह स्थान, वहां से 100-मील दूर था. जॉर्ज उनकी गाड़ी में बैठकर वहां गया.



फोर्ट स्कॉट में जॉर्ज ने एक स्कूल में दाखिला लिया. वो वहां “विल्डर हाउस” नाम के होटल में रहा. आजीविका के लिए वो एक किराने की दुकान में काम करता और होटल में रह रहे मेहमानों के कपड़े धोता. कुछ दिन वो एक लोहार के परिवार के साथ भी रहा. वहां भी वो घर के सभी कामों में मदद करता था.



मार्च 1879 में, फोर्ट स्कॉट में नकाबपोश गोरे लोगों की भीड़ ने एक अश्वेत कैदी को, जेल में से खींचकर निकाला. फिर रस्सी से बाँधकर वे उसे बहुत दूर तक घसीटते हुए ले गए. बाद में उन्होंने उस कैदी को फांसी पर लटकाकर उसे जला दिया.

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने उस वीभत्स घटना को प्रत्यक्ष अपनी आँखों से देखा. उसके तुरंत बाद उसने फोर्ट स्कॉट छोड़ दिया. उस अमानवीय काण्ड की यादें जॉर्ज को सारी ज़िन्दगी सताती रहीं.



वहां से जॉर्ज ओलाथे, केंसास गया. उसके बाद वो पोला और अंत में मिनियापोलिस, केंसास गया. वहां के स्कूल से जॉर्ज ने हाई स्कूल पास किया.

कार्वर में अभी भी ज्ञान की ज़बरदस्त भूख थी. 1885 में, उसने डाक द्वारा हाइलैंड यूनिवर्सिटी को अपनी अर्जी भेजी. उसकी अर्जी स्वीकार भी हो गई. पर जब जॉर्ज वहां पढ़ने पहुंचा तो उसे बताया गया कि “अश्वेत” होने के कारण उसका वहां दाखिला नहीं हो सकता था.

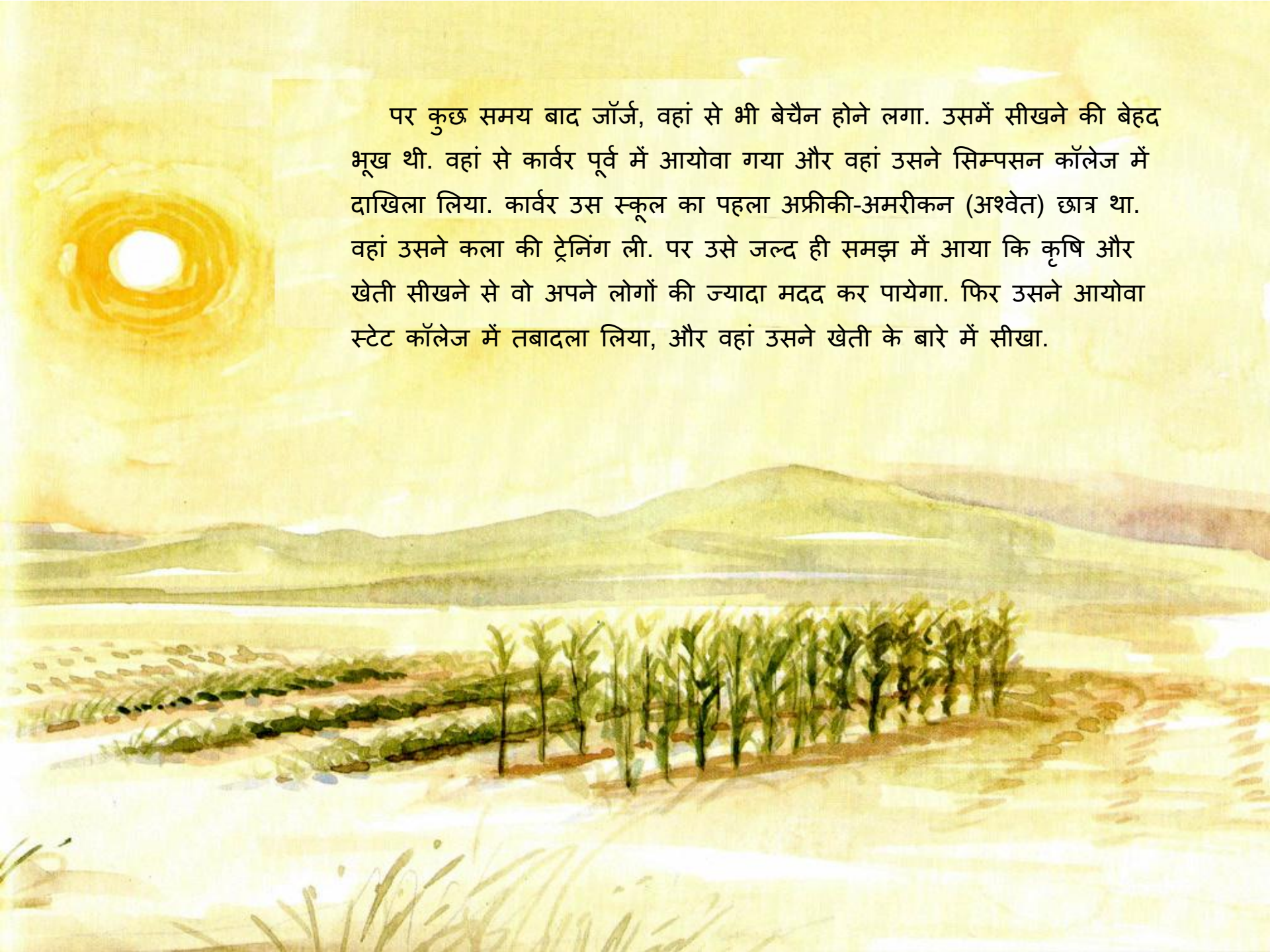




जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने तब अपनी आगे की योजना बदली. उसने वहां से कुछ दूर, पश्चिम की ओर कुछ ज़मीन खरीदी और एक किसान बनने का निश्चय किया. उसने अपने हाथों से एक-कमरे की झोपड़ी बनाई. उसकी दीवारें मिट्टी और पुआल की, और छत - डामर के गत्ते और मिट्टी की बनी थी. वहां जॉर्ज ने सब्जियां उगाईं, कला सीखी और कई मित्र बनाये.

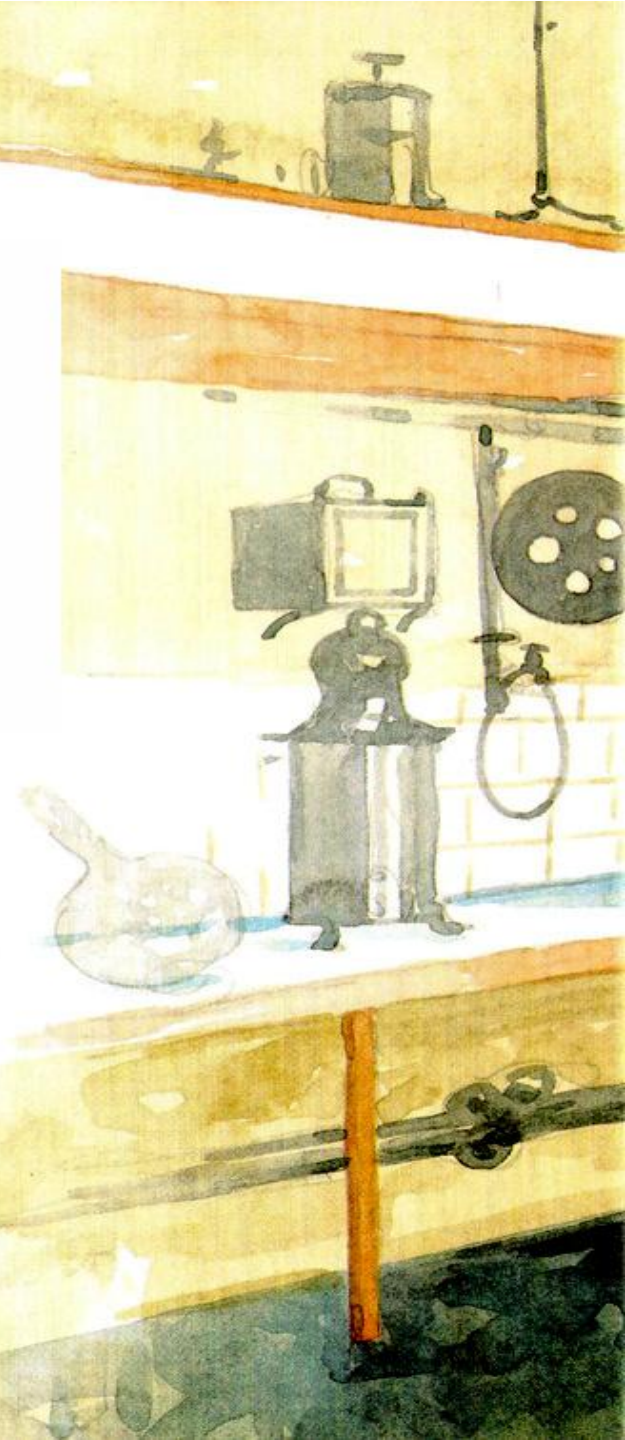


पर कुछ समय बाद जॉर्ज, वहां से भी बेचैन होने लगा. उसमें सीखने की बेहद भूख थी. वहां से कार्वर पूर्व में आयोवा गया और वहां उसने सिम्पसन कॉलेज में दाखिला लिया. कार्वर उस स्कूल का पहला अफ्रीकी-अमरीकन (अश्वेत) छात्र था. वहां उसने कला की ट्रेनिंग ली. पर उसे जल्द ही समझ में आया कि कृषि और खेती सीखने से वो अपने लोगों की ज्यादा मदद कर पायेगा. फिर उसने आयोवा स्टेट कॉलेज में तबादला लिया, और वहां उसने खेती के बारे में सीखा.



आयोवा स्टेट कॉलेज में कार्वर ने वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, जर्मन और कला-क्लब में जोरशोर से हिस्सा लिया. वो वहां स्कूल फुटबाल टीम का कोच बना. उसने प्रार्थना सभाओं का नेतृत्व भी किया. भगवान और धर्म दोनों, जॉर्ज के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे. इसलिए प्रकृति निरीक्षण के समय उसे लगता कि वो भगवान के सृजन के बारे में ही सीख रहा है, और उससे वो भगवान के और करीब पहुंचेगा.

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने 1894 में, आयोवा स्टेट कॉलेज से स्नातक की डिग्री हासिल की. बाद में उसी कॉलेज में वो पहला अफ्रीकी-अमरीकन (अश्वेत) टीचर बना. पर साथ-साथ उसने अपनी पढ़ाई भी जारी रखी. 1896 में उसने साइंस में मास्टर्स की डिग्री हासिल की.





1896 में उस ज़माने के सबसे सम्मानित अफ्रीकी-अमरीकन - बुकर टी. वाशिंगटन ने कार्वर को अल्बामा स्थित, टस्कजी इंस्टिट्यूट में काम करने को आमंत्रित किया. इस स्कूल की स्थापना 1881 में हुई थी और उसका उद्देश्य अफ्रीकी-अमरीकंस को नौकरियों के लिए कुशलताओं का प्रशिक्षण देना था. वहां जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर को, कृषि विभाग का प्रमुख (हेड) नियुक्त किया गया. अपनी बाकी ज़िन्दगी कार्वर ने वहीं रहते और काम करते हुए बिताई.





कार्वर, दक्षिण अमरीका में रह रहे लोगों, विशेषकर अफ्रीकी-अमरीकन लोगों की ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध था. लगातार कपास की खेती ने, वहां की मिट्टी को एकदम बंजर बना दिया था. कुछ सालों में कपास की पूरी-की-पूरी फसल भी बोल-वीविल नाम के कीड़े सफाचट्ट कर गए थे. यह कीड़े कपास के फूलों की कलियों में अपने अंडे देते थे. अब कार्वर ने वैकल्पिक फसलें खोजने का बीड़ा उठाया जिन्हें दक्षिण अमरीका में आसानी से उगाया जा सके और जिनसे दक्षिण के किसानों को सहारा मिले.

जल्द ही कार्वर ने खोज निकाला कि दो फसलें - मूंगफली और शकरकंदी, वहां की ज़मीन में आसानी से उगाई जा सकती थीं. उन दोनों फसलों को कीड़ों से भी कोई खतरा नहीं था. कार्वर ने उन दोनों फसलों को भगवान का उपहार बताया. कार्वर को यह भी पता था कि उत्तर अमरीका के निवासी उतनी मूंगफली और शकरकंदी नहीं खा पाएंगे जितनी मात्रा में दक्षिण के किसान उन्हें उगायेंगे. इसलिए कार्वर ने इन दोनों फसलों के, सैकड़ों नए-नए उपयोग खोजे.

अपनी प्रयोगशाला में कार्वर ने मूंगफली की वसा (फैट), गोंद, शक्कर, मांड आदि रसायनों को अलग-अलग किया.



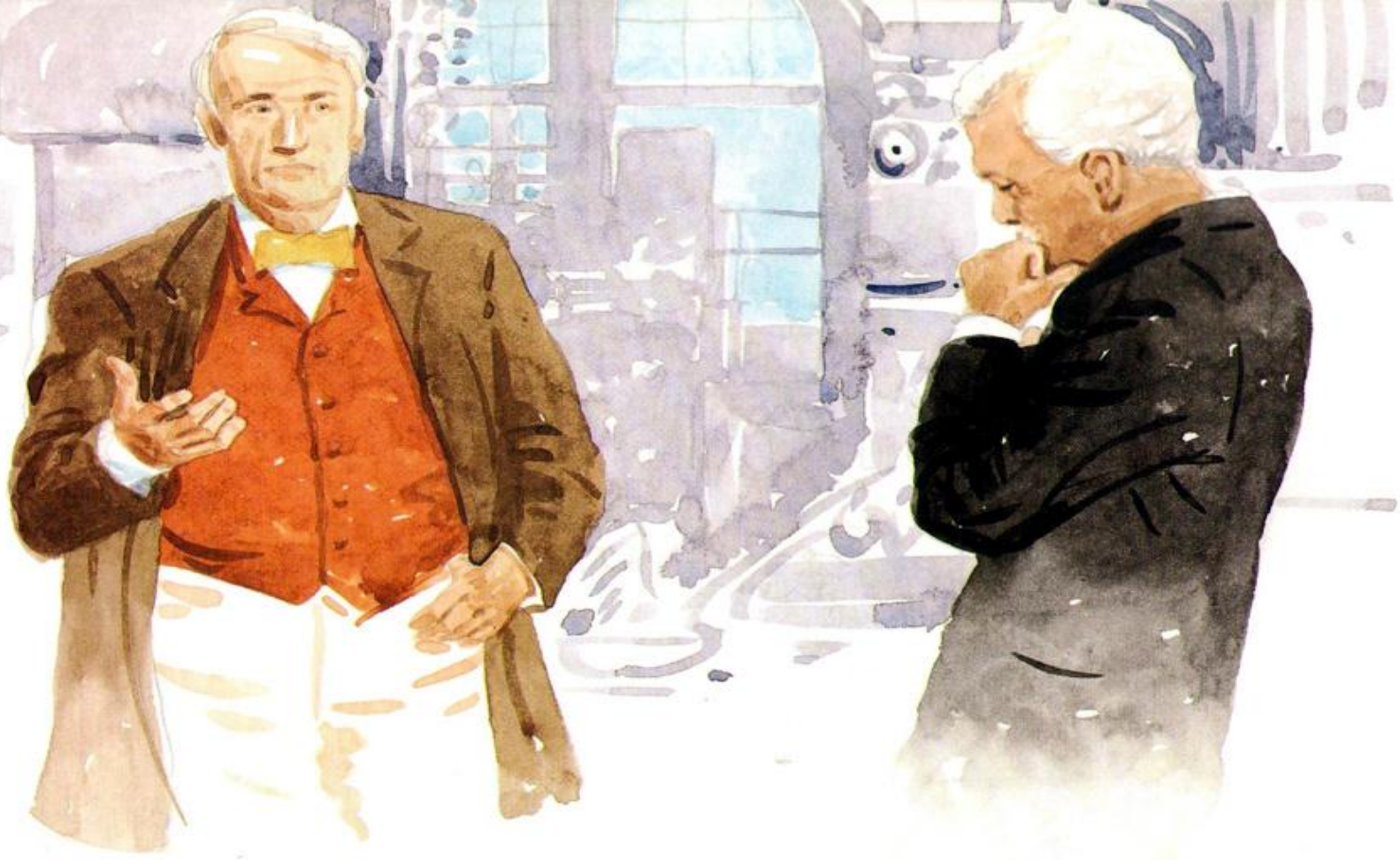


इन सब घटकों के साथ काम करके कार्वर ने मूंगफली के तीन सौ से अधिक उपयोग खोजे. इसमें मूंगफली का दूध, आटा, पनीर, कैंडी, आइसक्रीम, मक्खन, शैम्पू, चेहरे पर लगाने वाली क्रीम, गोंद, वार्निश और स्याही शामिल थीं. कार्वर ने शोध से यह भी पता किया एक प्रकार की मूंगफली का तेल मलने से पोलियो रोग के उपचार में भी मदद मिलती थी. पोलियो की बीमारी बच्चों को अपाहिज बनाती थी.

कार्वर ने शकरकंदी से भी, सौ से ज्यादा अलग-अलग उपयोगी चीज़ें बनाईं जिसमें आटा, शरबत, मांड, कॉफी जैसा पेय, शीरा, गोंद, सिरका, शराब और कृत्रिम रबर जैसी चीज़ें शामिल थीं.

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर को अपने काम में बेहद मज़ा आता था. वो अक्सर कहते थे, “पहले विज्ञान को सीखो-समझो, फिर विज्ञान तुम्हें मुक्ति दिलाएगा, क्योंकि विज्ञान ही ‘सत्य’ है.”

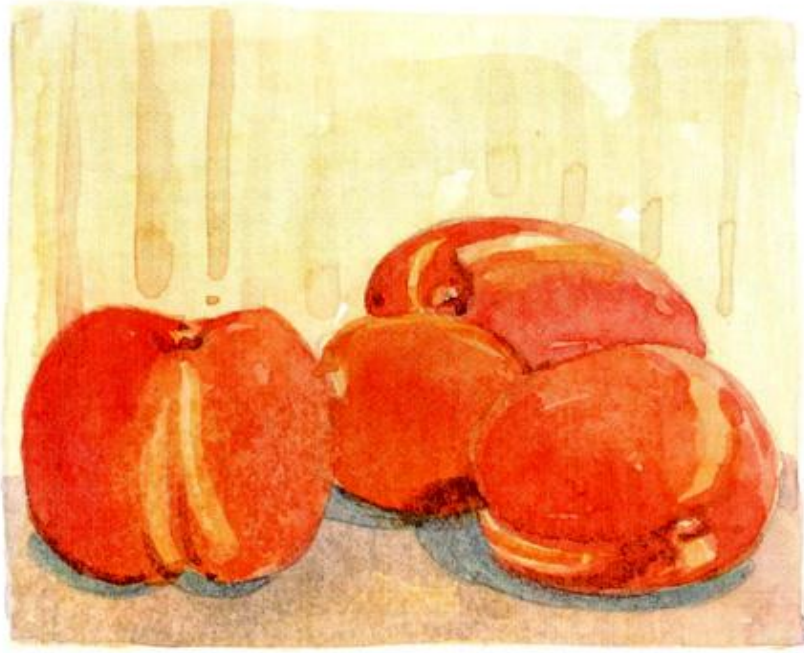




कार्वर मानते थे कि उनकी सभी खोजों के पीछे भगवान का हाथ था. इसलिए वो अपनी खोजों से कुछ भी मुनाफा नहीं कमाते थे. अक्सर टस्कजी इंस्टिट्यूट द्वारा दिया वेतन का चेक भी, उनकी मेज़ पर, बिना भुने पड़ा रहता था. प्रसिद्ध आविष्कारक थॉमस अल्वा एडिसन ने, कार्वर को भारी वेतन देकर अपनी प्रयोगशाला में आकर काम करने का निमंत्रण दिया. पर कार्वर ने टस्कजी छोड़ने से इंकार कर दिया. वो “अपने” - अफ्रीकी-अमरीकन लोगों के उत्थान के लिए ही, काम करना चाहते थे.

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर का सभी लोगों की - सम्पूर्ण मानवता की अच्छाई में, गहरा विश्वास था। उनका कहना था, “हम सभी लोग, एक-दूसरे के भाई हैं।” कार्वर मानते थे कि उन जैसे सफल अश्वेतों को, बाकी लोगों के लिए “रोल-मॉडल” बनना चाहिए था जिससे कि “पूरी दुनिया की आँखों में उनकी नस्ल की छवि बदले।”





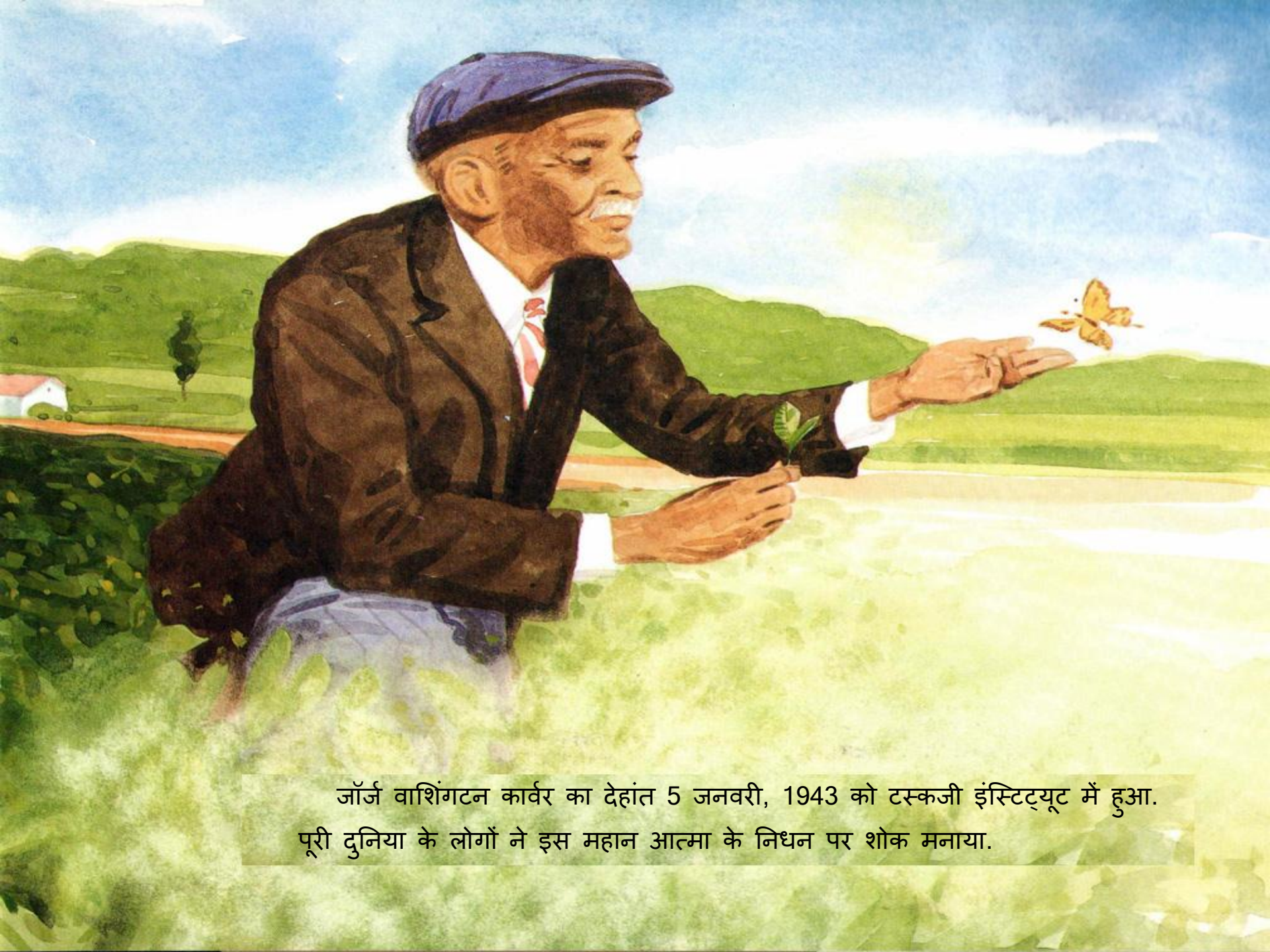
कार्वर को यह शब्द बहुत प्रिय थे, “हर चीज़ बचा कर रखो. जो तुम्हारे पास हो, उसी से अपनी ज़रूरतें पूरी करो.” 1941 में बीजों, मूंगफलियों, मुर्गी के पंखों से उन्होंने खुद बनाई कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी लगाई. टस्कजी की इस प्रदर्शनी में कार्वर की बनाई 71 पेंटिंग्स भी शामिल थीं. पेंटिंग्स के बहुत से रंग प्राकृतिक थे जिन्हें कार्वर ने सब्जियों, फूलों और अलाबामा की मिट्टी से बनाया था. *टाइम-पत्रिका* ने इस प्रदर्शनी की समीक्षा में कार्वर को “ब्लैक लिओनार्दो” का खिताब दिया. लिओनार्दो द विन्ची, दुनिया के एक महानतम कलाकार थे, और वो विभिन्न विधाओं में पारंगत थे.

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर को उनके काम के लिए अनेकों पुरुस्कारों से नवाज़ा गया.

1923 में, *नेशनल एसोसिएशन फॉर द एडवांसमेंट ऑफ़ कलर्ड पीपल* ने उन्हें “स्पिन्गर्ण मैडल” दिया.

1939 में, उन्हें कृषि रसायन विज्ञान में उत्कर्ष शोध के लिए *थिओडोर रूज़वेल्ट मैडल* प्रदान किया गया.





जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर का देहांत 5 जनवरी, 1943 को टस्कजी इंस्टिट्यूट में हुआ.
पूरी दुनिया के लोगों ने इस महान आत्मा के निधन पर शोक मनाया.

प्रमुख तारीखें

1863 या 1864	मिसौरी, अमरीका में जन्म
1886	नेस कंट्री, केंसास में बसे और वहां अपने लिए झोपड़ी बनाई
1891-1896	आयोवा स्टेट कॉलेज में शिक्षण
1921	अमरीकी कांग्रेस की एक कमेटी को मूंगफली के अनेकों उपयोगों के बारे में बताया
1921	स्पिन्गर्ण मैडल से सम्मानित
1939	रूज़वेल्ट मैडल से सम्मानित
1943	5, जनवरी को टस्कजी इंस्टिट्यूट, अल्बामा में देहांत

लेखक का नोट

जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर जब 1921 में, कांग्रेस कमेटी के सामने उपस्थित हुए तब उनके काम को बड़े स्तर पर सराहा गया. उस समय कांग्रेस, विदेशों से आयात की गई मूंगफली पर टैक्स लगाने की बात सोच रही थी. इस टैक्स से अमरीका में मूंगफली उगाने वाले किसानों को बहुत राहत मिलती. कार्वर ने कांग्रेस के सदस्यों को मूंगफली के सैकड़ों उपयोग दिखाए. कार्वर के लेक्चर के बाद ही कांग्रेस ने मूंगफली के आयात पर टैक्स लगाने का निर्णय लिया. उसके बाद कार्वर को बहुत शोहरत मिली.

बुकर टी. वाशिंगटन ने 1895 के अपने भाषण में कहा कि अश्वेतों को “वो जहाँ कहीं हो, उन्हें अपनी स्थिति बेहतर करनी चाहिए.” उनका मानना था कि अश्वेतों को अमरीकी व्यवस्था के अंतर्गत ही, काम करना चाहिए. कई मायनों में कार्वर और बुकर टी. वाशिंगटन की नस्ल संबंधी मान्यताओं में, काफी समानता थी. 1937 में कार्वर ने लिखा “मैं अपने लोगों को यह दिखाना चाहता हूँ कि - रंग उनके पिछड़ेपन का एकमात्र कारण नहीं है.” अश्वेतों के कई क्रांतिकारी नेता जैसे डब्लू. ई. बी. बोइस को, कार्वर के विचार पसंद नहीं थे. वे चाहते थे कि अश्वेत, समान अधिकारों की मांग करें और उनके लिए लड़ें.